प्रधान–सम्पादक
यशदेव शल्य
मुकुंद लाठ

सम्पादक
अम्बिकादत्त शर्मा
प्रदीप कुमार खरे

उन्मीलन

मानसिक हिन्द स्वराज का वैतालिक
दार्शनिक षाण्मासिक

वर्ष 31, अंक 2
जुलाई-दिसम्बर, 2017

भारतीय नीतिशास्त्र का औपनिषद् प्रस्थान और रामचंद्र दत्तात्रेय राणाडे की अभ्युक्तियाँ

अम्बिकादत्त शर्मा

'भारतीय चिन्तन का पर्यवसान वेदान्त में होता है'– यह प्रो. रामचन्द्र दत्तात्रेय राणाडे की मूलभूत दृष्टि रही है। उनके द्वारा भारतीय दर्शन पर किया गया इतिहासपरक लेखन, उपनिषद् और गीता को केन्द्र में रखकर भारतीय अध्यात्म–परम्परा को समझने का प्रयास और विभिन्न संत परम्पराओं के माध्यम से वेदान्त चिन्तन–परम्परा का पल्लवन[1] – सबके सब का रूझान यही दिखाना रहा है कि वेदान्त जिसका उत्स उपनिषदों में प्राप्त है, वही अद्वैत–दृष्टि भारतीय–चिन्तन की पार्यन्तिक स्थिति है। वैसे लोग जो भारतीय परम्परा को बहुलवादी बौद्धिक परम्परा के रूप में देखते हैं, उनके लिए प्रो. राणाडे का यह वक्तव्य'' भारतीय चिन्तन का पर्यवसान वेदान्त में होता है''– एक बलीयसी वक्तव्य ही प्रतीत हो सकता है। परन्तु यदि किसी दार्शनिक दृष्टि की पार्यन्तिक प्रस्थिति और भूमिका को परखने का एक मापदण्ड 'सांस्कृतिक स्वीकरण' भी हो सकता है तो प्रो. राणाडे की इस अभ्युक्ति को उचित ठहराया जा सकता है। भारतीय दार्शनिक चिन्तन के बहुआयामी विकास में अद्वैतवादी चिन्तन धारा वैदिक परम्परा में, बौद्ध परम्परा में, व्याकरण परम्परा में, शैव–शक्ति परमम्परा में, साहित्य परम्परा में, और यहाँ तक कि धर्म–शास्त्र और स्मृतियों के चिन्तन में भी मूलगामी रूप से प्राप्त होती है। परन्तु देखने लायक बात यह है कि वेदान्त को जितना सांस्कृतिक स्वीकरण भारतीय परम्परा में प्राप्त हुआ है, उसका किसी अन्य अद्वैती चिन्तनधारा को नहीं मिला है। इसलिये वेदान्त की प्रतिष्ठा भारतीय परम्परा में एक 'धर्म' की तरह है, जिसने एक समग्र–जीवन–दर्शन का रूप धारण किया है। यह बात अलग है कि वेदान्त के विविध सम्प्रदायों के आन्तरिक मतभेद कम नहीं, फिर भी सबकी आत्मा एक है और वह है – एकमेवाद्वितीयम्।[2] अतः उपनिषदों में मौलिक रूप से उपलब्ध वेदान्त की अद्वैतवादी तत्त्वदृष्टि और मूल्य दृष्टि को भारतीय चिन्तन परम्परा का